विद्या भवन बालिका लिद्यापीठ,लखीसराय

वर्ग नवम विषय संस्कृत शिक्षक श्यामउदय सिंह

पाठ: द्वितीय: पाठनाम स्वर्णकाक:

ता: 22-04-2021 (एन.सी.ई.आर.टी.पर आधारित)

- सुर्योदयात्पूर्वमेव सा तत्रोपस्थिता । वृक्षस्योपरि विलोक्य सा चाश्चर्यचकिता सञ्जाता यत्तत्र स्वर्णमय: प्रासादो वर्तते ।यदा काक: शयित्वा प्रबुद्धस्तदा तेन स्वर्णगवाक्षात्कथितं हंहो बाले ! त्वमागता।
- शब्दार्था:

  पूर्वमेव -पहले ही ,उपस्थिता -उपस्थित हो गई

  वृक्षस्योपरि –वृक्ष के ऊपर , आश्चर्यचकिता -हैरान

  सञ्जाता –हो गई , स्वर्णमय: -सोने से बना

  प्रासाद: - महल , वर्तते -है, शयित्वा –सोकर

  प्रबुद्ध: -जागा ,स्वर्णगवाक्षात् -सोने की

  खिड़की से ,हंहो -अरे/हे , आगता –आ गई
- अर्थ

  सूर्योदय से पहले ही वह (लड़की)वहां पहुंच गई। वृक्ष के ऊपर देखकर वह आश्चर्यचकित हो गई कि वहां सोने का महल है जब कौवा सोकर उठा तब उसने सोने की खिड़की से झाँक कर कहा -अरे बालिका !तुम आ गई।